स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड
(षष्ठ पत्र - प्रयोजनमूलक हिन्दी)
हिन्दी की शब्द-सम्पदा - II

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज

(II) निर्माण की दृष्टि से -

निर्माण की दृष्टि से शब्दों के तीन भेद किए जाते हैं - रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ़ शब्द।

रूढ़ शब्द - वे शब्द जिनकी ध्वनियों को अलग करके कोई अर्थ नहीं निकाला जा सकता या जिनकी व्युत्पति ज्ञात न हो, जैसे - हाथ, पेट, किताब इत्यादि।

यौगिक शब्द - वे शब्द जो दो या दो से अधिक रूढ़ शब्दों से मिलकर बनते हैं तथा जिनका अर्थ दोनों के अर्थ जुड़ने से निर्धारित होता है, जैसे - पुस्तकालय, हथगोला, जलज इत्यादि।

यौगिक योगरूढ़ शब्द - ऐसे शब्द जो संरचना की दृष्टि से यौगिक हैं किंतु जिनका अर्थ एक विशेष रूप में रूढ़ हो चुका है। जैसे - पंकज शब्द का यौगिक दृष्टि से अर्थ होगा - कीचड़ में जन्म लेने वाला, किंतु इसका प्रचलित अर्थ है कमल, जो कि रूढ़ हो चुका है। इसी प्रकार नीलकंठ इत्यादि शब्द भी इसी प्रकार के हैं।

(III) प्रयोग की दृष्टि से -

प्रयोग क्षेत्र के आधार पर सभी भाषाओं में शब्दों को दो भागों में विभाजित किया जाता है - सामान्य शब्द तथा पारिभाषिक शब्द

(क) सामान्य शब्द - वे शब्द जो सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त होते हैं। इन शब्दों का निश्चित और वस्तुनिष्ठ अर्थ होना आवश्यक नहीं होता है। संदर्भ के परिवर्तन के साथ ये शब्द अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होते जाते हैं। इनके अतिरिक्त संबंध में एक और विशेष बात यह भी है कि इनका अपने नजदीकी शब्दों से अंतर निश्चित नहीं होता है। जैसे - राम अच्छा लड़का है।
अच्छा मैं जाता हूँ।
मैं अच्छा हूँ, आप कैसे हैं?

तीनों वाक्यों में 'अच्छा' शब्द का अर्थ अलग-अलग है। पहले में एक चारित्रिक विशेषता के रूप में है, दूसरे में एक अलविदा सूचक शब्द तथा तीसरे संदर्भ में यह शारीरिक स्वास्थ्य को सूचित करने के लिए आया है। एक ही शब्द का बहुआयामी प्रयोग उसे सामान्य शब्द बनाता है।